

श्रीमन्मोक्षमातु जायनमः॥ उज्जिष्ठं तमहाभूतायेभूताभूमिपालकाः॥ भू
 तातामविरोधेतेवस्तुनकर्मसमाचरे॥ १॥ ॐ प्रोक्तं वरदे देवी प्रचरे वत्स
 वदिति॥ आप्यात्ति कंदसां मातृवत्सयो नोतमोऽस्मृतै॥ २॥ पुत्यावाह तम॥
 ॐ अस्य वसिष्ठशपमो चतमं त्रस्य वसिष्ठमृषिरत्तुष्टुपर्वदे॥ श्रीविष्णु
 देवता वसिष्ठशपमो चतनो वनियोगः॥ प्रहो महान् बहुहं मे दिव्यसिद्धे सरस्व
 ति॥ प्रजैरे प्रमरे चैव वसिष्ठशपमस्तुक्तामव॥ इति शपमा चतम॥ उवाक
 उ प्राणप्राण॥ उ चक्षुः॥ उ चक्षुः॥ उ श्रोत्र श्रोत्र॥ उ रूद्र॥ उ लतादे॥ उ तामो॥ उ हृदि
 उ कंठे॥ उ शिरः॥ उ शिखा॥ उ कवचं॥ उ भ्रुवः स्वस्त्यसवितुर्वरेण्यं भर्गो दे
 वस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥ उ भूः प्रमुष्ठाभ्यां भूमः॥ उ भुवस्त
 उ तीभ्यां तमः॥ उ स्वः मध्यमाभ्यां तमः॥ उ तत्साधितं वरेण्यं प्रतामिकाभ्यां

ॐ भर्गो देवस्य धीमहि कर्णिकानिष्ठा काभ्यां तमः । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
 तत्तत्करपुष्पाभ्यां तमः । ॐ भूः भृगुदयाय तमः । ॐ भुवः भृगुसे स्वाहा ॐ स्वः
 भृगुस्वाद्यैव षट् । ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं कवचाय ह । ॐ भर्गो देवस्य धीमहि
 हि जन्नयाय नो षट् । प्रचोदयात् ॥ प्रचोदयात् ॥ इति करपुष्पाभ्यां तमः ॥
 तत्पादयो रुरुजघावरैण्यं कर्णिकानिष्ठा भर्गो देवस्य धीमहि
 हि कर्णिकानिष्ठा साग्नेनेत्रे यो स्पता ललाटे ॥ ॐ भूः ॐ भुवः । ॐ स्वः । ॐ
 महः । ॐ जतः । ॐ तत्स । ॐ सत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥ ॐ प्रापो यो तीरसो मृतं व्रतं स भूः भुवः स्वरो
 मिति शिखामचः ॥ इति व्रतं गायत्री समाप्तः सुभमस्तु ॥ सुभं भूयात्
 राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

श्रीमद्दुर्गायात्रा

- १ प्रणेते चरणे रोतुनि
- २ दुर्गायात्राया रिक्ता ७
- ३ चंदुचिगति चंद्रधरा
- ४ मोरिदुर्गायात्रा १५
- ५ वागीश्वरि स्वदमाना
- ६ कात्यायनिविकृता
- ७ कलिकाकाल शक्ति
- ८ नाहागोरि सिद्धधरि
- ९ संकयसिद्धिदानमि